# साहस

## प्रस्तावना

सब कुछ अच्छा होते हुए भी कई बार ऐसा होता है, हम किसी वजह से कार्य करने का साहस नहीं करते हैं तो अनुकूल परिस्थितियां भी आपके खिलाफ चली जाती हैं. एक समय में जो जीत करीब नजर आ रही थी, वह हार में बदल जाती है. हाथों में शस्त्र हों और वो आधुनिक हों तो भी काम नहीं आएंगे अगर आपके अंदर साहस न हो. किसी ने कहा है कि सीमा पर लडने वाले जवानों की बंदूकें नहीं लडती हैं, बल्कि बंदूकों के पीछे जो हाथ हैं वो लडते हैं, और वो हाथ भी युद्ध नहीं करते बल्कि हाथों के पीछे जो साहस से भरा दिल है वही युद्ध लडता है. हम अपने जीवन में प्रतिदिन किसी न किसी समस्या का सामना करते हैं और ऐसी स्थितियों का समाधान वही कर सकता है जो साहसी है. साहसी मनुष्य से भय कोसों दूर रहता है. साहस के बल पर ही मुगलों की तलवार से भयाक्रांत भारत में शिवाजी महाराज के शौर्य और साहस ने हिंदवी स्वराज्य को साकार होते देखा है. साहस दिखाने वालों का लोहा सारी दुनिया मानती है. जहां साहस वहीं विजय है.

## प्रश्न

१. साहस रखने के क्या फायदे हैं?

२. साहस का कोई किस्सा बनाइए?

३. कठिन परिस्थिती में आप किस तरह का व्यवहार करेंगे?

४. कभी हार कर किसी बात पर निराश हुए हैं?

# १. पाँच साहसी दोस्त....

बहुँत समय पहले की बात है। एक घना जंगल था। उसी जंगल के पास एक गाँव था, गाँव के लोगों का माननाथा कि इस जंगल में कई भूत, जंगली जानवर और बड़े-बड़े सांप रहते है, पर  उस जंगल में ऐसा कुछ नही था।बहुँत ही सुंदर और प्यारा जंगल था। मगर गाँव के जितने बड़े लोग थे वह अपने बच्चों से कहते थे कि उस जंगल में मत जाना वर्ना कोई जंगली जानवर तुम्हे मार कर खा जाएगा या फ़िर तुम्हें भूत पकड़ लेगा। सभी गाँव के बच्चे उस जंगल में जाने से डरते थे।

उसी गाँव मे ५ बच्चों कि एक टोली थी, उन पांचो बच्चों में आपसमें बहुत ही अच्छी दोस्ती थी। वे थोड़े शैतानी जरुर करते थे मगर निडर और साहसी थे। एक दिन उन्होंने ने आपस में सलाह कि चलो उस जंगल में जाकर देखा जाय कि क्या है वंहा पर, हो सकता है ये बड़े लोगऐसे हीझूठ बोल रहे हो। फ़िर पांचो दोस्त गाँव में बिना किसी को बताये उस जंगल कि तरफ चल दिए। जंगल में चलते - चलते वो बहुत दूर निकल आए मगर अभी तक उन्हें कंही भी कोई भूत, सांप ये जंगली जानवर नजर नही आया, रस्ते में उन्हें मोर, खरगोश, हिरन, तोते, जंगली कबूतर और ढेर सारे रंग बिरंगी चिड़िया दिखी। आगे चलने पर उन लोगो ने देखा कि पेड़ों के बीच एक बहुत ही सुंदर महल बना है, और उस महल के आस-पास ढेरसारे बच्चे खेल रहे थे, पांचो दोस्त उन्ही बच्चों के साथ खेलने लगे। महल के पास वाले बगीचे में ढेर सारे फल केपेड़ लगे थे, सभी ने पेड़ से तोड़ कर ढेर सारे फल खाया और झूला भी झूला।

अब शाम हो चली थी बातचीत में उन बच्चों ने बताया कि ये हम लोगो का स्कूल है और हम लोग यंहा रहकर अपनी पढ़ाई कर रहे है हमारे परिवार के लोग इसी जंगल में रहते है। सभी बच्चों के साथ इनकी दोस्ती हो गई। पांचो दोस्तों ने सभी बच्चों से बिदालेकर अपने गाँव कि तरफ़ चल दिए। इस तरफ़ बहुत देर से बच्चों के गाँव में न होने से गाँव वाले परेशान हो गएथे। उन्हें लग रहा था कि हो न हो ये बच्चे उस जंगल में गए होंगे और वनः पर उन्हें जंगली जानवर या भूत मार डाला होगा। जंगल में उन्हें खोजने डर के मारे कोई नही जा रहा था।

तभी जंगल से वो पांचो बच्चे आते हुए दिखाई दिए। गाँव वाले सभी खुश हो गए, पांचो दोस्तों ने जंगल के बारे में और वहाँ के स्कूल के बारे में बताया।अगले दिन सभी गाँव वाले उस जंगल में गए उन्होंने वहां पर स्कूल देखा सभी से मिले और बहुँत खुश हुए उन्होंने अपने गाँव के सभी बच्चों को उस स्कूल में भेजने लगे। अब उन्हें पता चला कि जंगल के बारे में कितनी झूठी अफवाह फैली हुई थी। अब उस गाँव में बड़े लोग उन पांचो दोस्तों कि साहस कि कहानी अपने बच्चों को सुनाने लगे।

# २. साहसी अब्दुल हमीद

उत्तर प्रदेश के गाजीपुर जिले में मगई नदी के किनारे बसे गांव धामपुर में सन 1933 में अब्दुल हमीद का जन्म हुआ। अब्दुल हमीद के सिलाई का काम होता था, पर उनका मन इस काम में नहीं लगता। वे लाठी चलाना सीखते और कुश्ती लड़ते, गुलेल का निशाना लगाते। ये इतने साहसी थे कि मगई नदी को बाढ़ के दिनों में भी रात्रि में तैर कर पार कर लेते।

एक बार मगई नदी में बाढ़ आई थी। उस समय दूसरे गांव की दो स्त्रियां बाढ़ मे बह रही थी। नदी के किनारे खड़े हमीद उनको बचाने के लिए नदी में कूदे और उन्हें बाहर निकाल लाये और उन्हें उनके गांव भी छोड़ आये।

हमीद का मन बचपन से ही सेना में भर्ती होने का था। 1954 में घर वालों से यह कह कर कि रेलवे में भर्ती होने जा रहे हैं, सेना में भर्ती हो गये और 1960 तक जम्मू-कश्मीर में रहे। उस समय जम्मू-कश्मीर बोर्डर पर पाकिस्तानी घुसपैठिये वेश बदलकर कश्मीर के रास्ते भारत में घुसते थे। एक बार इनायत नाम के कुख्यात आतंकी को पकड़ कर अपने उच्च अधिकारियों को सौंपा इस बहादुरी के हमीद की तरक्की हुई और वह लांस नायक बना दिये गये।

बात 10 सितम्बर 1965 की है। भारत और पाकिस्तान का युद्ध एक अजीबोगरीब मोड़ ले रहा था। पाकिस्तान का नापाक इरादा अमृतसर पर अपना अधिकार करने का था। अमृतसर से पश्चिम की ओर कसूर क्षेत्र में अब्दुल हमीद की तैनाती थी। यहीं से पाकिस्तानी कमाण्डर ने आगे बढ़कर अमृतसर को घेरने की योजना बनाई थी। अपनी योजना के अनुसार पैंटन टैंकों के फौलादी लश्कर के साथ फौलादी गोले बरसाते हुए दुश्मन की सेना भारतीय फौज पर टूट पड़ी। परिस्थिति की गंभीरता को समझने में हमीद को देर न लगी। उन्होंने देखा कि दुश्मन देश की तैयारी बहुत अधिक है। बिना प्राणों को दाव लगाए पैंटन टैंकों के आक्रमण को रोकना संभव नहीं है। अब्दुल हमीद को देश प्राणों से अधिक प्यारा था।

चौथा टैंक भी हमीद की जीप की रेंज में आ गया। लेकिन इस टैंक का मुख हमीद की जीप की ओर ही था। हमीद ने पीछे हटने की बजाय उस टैंक पर अपना निशाना

साधकर गोला दागा। तब तक उस टैंक से भी गोला छूट चुका था। चौथा टैंक भी बरबाद हो चुका था। इतने में एक गोला हमीद की जीप पर गिरा और भारत माँ का लाडला माँ की रक्षा करते हुए शहीद हो गया। 10 सितम्बर 1965 को केवल 32 वर्ष की अल्पायु में अब्दुल हमीद के बलिदान ने सेना में ऐसा जोश भरा कि दुश्मन का दिल दहल उठा। अब्दुल हमीद ने दिखा दिया कि युद्ध हथियारों से नहीं, साहस और उत्साह से लड़ा जाता है। भारत सरकार ने शहीद अब्दुल हमीद को परमवीर चक्र सम्मान से विभूषित किया है।

## ३. मनन

आज जो कहानी मैं आपको सुनाने जा रहा हूँ वो एक सच्ची घटना पर आधारित है। यह कहानी है दशरथ माँझी की, जिन्होंने अपनी मेहनत और साहस के दम पर यह साबित कर दिया कि अगर आदमी में हिम्मत है तो वह किसी भी तरह की कठिनाई पर विजय पा सकता है। दशरथ माँझी का जन्म बिहार में स्थित गया ज़िले के एक छोटे से गाँव गहलौर में एक भूमिहीन मज़दूर परिवार में हुआ था।

दशरथ माँझी का बचपन भयंकर ग़रीबी और तंगहाली में बिता, जिस कारण बहुत छोटी उम्र से ही उन्हें अपना और अपने परिवार का पेट पालने के लिए स्कूल जाने के बजाय काम करने को मजबूर होना पड़ा। जिस ज़मींदार के खेत में दशरथ काम करते थे वह पहाड़ के दूसरी ओर स्थित था, कोई सड़क न होने के कारण उन्हें हर दिन वहाँ पहुँचने के लिए कई किलोमीटर लम्बा रास्ता तय करना पड़ता था। एक दिन दशरथ की पत्नी एक दुर्घटना में बुरी तरह से घायल हो गयी, परन्तु उनके गाँव से अस्पताल लगभग 70 किलोमीटर दूर था और सड़क न होने के कारण वहाँ पहुँचने का रास्ता बहुत ही दुर्गम और कठिनाइयों भरा था।

दशरथ माँझी ने अपनी पत्नी की जान बचाने के लिए उन्हें अस्पताल पहुँचाने की पूरी कोशिश की, परन्तु बीच रास्ते में ही उनकी मृत्यु हो गयी। उस दिन से दशरथ ने अपने मन में ठान लिया कि वह अपने गाँव से शहर के बीच सड़क बनाकर ही दम लेंगे, जिससे बाक़ी लोगों के साथ वो हादसा न हो जो उनके साथ हुआ। इस प्रकार औजार के नाम पर सिर्फ़ एक हथौड़े और दिल में कुछ कर गुज़रने का अरमान लिये उन्होंने पहाड़

को तोड़ सड़क बनाने का काम शुरू कर दिया।

परन्तु जिस तरह हमेशा होता आया है कि जब भी कोई इन्सान कुछ नया करने के लिए क़दम बढ़ाता है तो लोग उसका मज़ाक़ उड़ाते हैं। इसी तरह जब दशरथ ने भी सड़क बनाने का कार्य शुरू किया तो उनके गाँव के लोगों ने उन्हें पागल कहकर उनका मज़ाक़ उड़ाया। परन्तु दशरथ इन तमाम बातों की परवाह न करते हुए दिन-रात अपने काम में जुटे रहे।

आख़िरकार उनकी 22 वर्षों की मेहनत रंग लायी और 1982 में दशरथ माँझी पहाड़ को तोड़ 360 फुट लम्बा और 30 फुट चौड़ा रास्ता बनाने में कामयाब हुए। उनकी लगन और मेहनत के चलते आज उनके गाँव से शहर की दूरी 70 किलोमीटर से घटकर केवल 15 किलोमीटर रह गयी है। लेकिन दशरथ माँझी यहीं नहीं रुके, बल्कि अपने गाँव में अस्पताल, स्कूल, तथा स्वच्छ पानी जैसी बुनियादी सुविधाएँ उपलब्ध करवाने के लिए दिल्ली तक पदयात्रा भी कि, परन्तु अपने सपने को पूरा होते देख पाने से पहले ही कैंसर के कारण 2007 को उनकी मृत्यु हो गयी।

साथियो, यह कहानी हमें बताती है कि वह मज़दूर ही है जो अपने हाथों से बड़ी-बड़ी आलीशान इमारतें बनाते हैं, तथा अपना ख़ून-पसीना बहाकर धरती पर फ़सलें बोते हैं। परन्तु इतनी मेहनत करने के बावजूद आज भी हम गन्दी बस्तियों में रहने को मजबूर हैं, पूरी दुनिया के लोगों के लिए तमाम सुख-सुविधाएँ उत्पन्न करने के बावजूद आज भी हम और हमारा परिवार भूख और ग़रीबी के कारण नारकीय जीवन जीने को मजबूर हैं। ऐसा इसलिए है क्योंकि इस पूरी पूँजीवादी व्यवस्था में मेहनत तो हम करते हैं, लेकिन मुनाफ़ा मालिक लूटकर ले जाता है।

आज अगर एक सुई से लेकर हवाई जहाज़ तक तमाम चीज़ें मज़दूर बना रहे हैं तो आगे चलकर पूरे देश की बागडोर भी अपने हाथ में ले सकते हैं। लेकिन इसके लिए सबसे पहले हमें अपने अधिकारों को जानते हुए संगठित होना पड़ेगा, केवल तभी हम लूट-खसोट पर टिकी इस पूँजीवादी व्यवस्था को बदलकर शोषण रहित समाज की स्थापना कर पायेंगे। यही हमारी दशरथ माँझी समेत मज़दूर वर्ग के अन्य शहीदों के लिए एक सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

## सुविचार

- हमारी सुरक्षा, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे ग्रह के लिए बदलाव लाने का हममें साहस और प्रतिबद्धता होनी चाहिए। **-बराक ओबामा (अमेरिकी राष्ट्रपति)**
- मानव के सभी गुणों में साहस पहला गुण है, क्योंकि यह सभी गुणों की जिम्मेदारी लेता है | **- चर्चिल**
- सच्चा साहसी वह है, जो बड़ी से बड़ी विपत्ति को बुद्धिमत्तापूर्वक सह सकता है | **-शेक्सपीयर**
- वह सच्चा साहसी है, जो कभी निराश नहीं होता| **-अज्ञात**
- साहस का अर्थ होता है यह पता होना कि किस बात से डरना नहीं चाहिए| **-प्लेटो**

## संकल्प

**हमारी सुरक्षा, हमारी अर्थव्यवस्था और हमारे ग्रह के लिए बदलाव लाने का हम में साहस और प्रतिबद्धता रखेंगे**